

# प्राचीन भारत में मूर्ति कला का विकास (Development of Sculpture in Ancient India)

**By Manikant Singh**

प्राचीन भारत में मूर्तिकला का विकास अन्य ललित कलाओं; जैसे- स्थापत्य तथा चित्रकला के साथ ही हुआ दिखता है। प्राचीन भारत में तीनों ही कलाओं के विकास के उत्कृष्ट उदाहरण प्राप्त होते हैं। ये तीनों कलाएं एक-दूसरे से इस रूप में अभिन्न हैं कि इनमें एक के बिना दूसरे की सुदंरता की परिकल्पना भी नहीं हो सकती है। भारत में मूर्तिकला का विकास अनेक रूपों में हुआ है जैसे कि मूर्तिकला, धातु मूर्तिकला अथवा पाषाण मूर्तिकला। ये मूर्तियां भित्तिचित्र की भी अंग हो सकती हैं अथवा इसकी स्थापना स्वतंत्र रूप से भी हो सकती है। प्राचीन भारत में मूर्तिकला के विकास को उसके कालक्रम के अनुसार समझना व्यावहारिक प्रतीक होता है।

Sculpture in ancient India evolved in tandem with other fine arts, including architecture and painting, showcasing remarkable examples of their development. These interconnected arts are inseparable, as their collective beauty is unimaginable without each other. Sculpture in India flourished in various forms, such as metal and stone sculptures, which could either be incorporated into murals or stand independently. Examining the chronology of sculpture provides practical insights into its evolution in ancient India.

## प्रागैतिहासिक से पूर्व मौर्ययुगीन मूर्तिकला

भारत में मूर्तिकला का प्राचीनतम साक्ष्य उच्च पुरापाषाण काल से दिखाई देता है। इस काल के बेलन घाटी में स्थित लोहंदानाले से अस्थि निर्मित मातृदेवी की मूर्ति प्राप्त हुई है। इसके पश्चात् के काल में अनेकानेक पाषाण मूर्तियों की प्राप्ति हुई है। खासकर हड़प्पा सभ्यता की खुदाई में मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा की खुदाई से बहुत सारी पाषाण मूर्तियों की प्राप्ति हुई है। यद्यपि ये मूर्तियाँ पूर्ण रूप से विकसित नहीं हैं, तथापि प्रारंभिक मूर्तिकला की अच्छी उदाहरण हैं।

## Prehistoric to Pre-Mauryan Age Sculpture

The Upper Palaeolithic period provides the earliest evidence of sculpture in India. A bone statue depicting a mother goddess was discovered in Lohanda Nala, located in the Belan valley. Following this discovery, numerous stone idols were also found. Notably, during the excavation of the Harappan civilization, MohenjoDaro and Harappa yielded a large number of stone sculptures. While these early sculptures were not fully developed, they serve as important examples of the art form of early stages.



मोहनजोदड़ो से प्राप्त प्रस्तर की योगी अथवा पुरोहित की मूर्ति तथा काँसे से निर्मित एक नाचती हुई लड़की की मूर्ति विशेष रूप से उल्लेखनीय है। मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा से प्राप्त पुरुषों की भव्य प्रतिमाओं तथा मूर्तियों को देखने से अनुमान होता है कि सिंधु घाटी सभ्यता पर सुमेरी तथा भारतीय प्रभाव था।

Particularly noteworthy are the stone statue of a yogi or priest from MohenjoDaro and the bronze dancing girl. The magnificent statues and sculptures of men found in Mohenjodaro and Harappa indicate possible influences from both Sumerian and Indian cultures on the Indus Valley Civilization.

सैंधव मूर्तिकला के अंतर्गत मनुष्यों तथा पशुओं, दोनों की मूर्तियाँ निर्मित की गई हैं। मानव मूर्तियाँ अधिकतम महिलाओं की हैं। ये मूर्तियाँ पुरुष मूर्तियों की तुलना में अधिक सुघड़ तथा प्रभावोत्पादक हैं। यहाँ पर मानव मूर्तियों की तुलना में कहीं अधिक पशुओं की मूर्तियाँ भी पायी गई हैं तथा ये कला की दृष्टि से उच्च कोटि की भी हैं। इन मूर्तियों में कूबड़ वाले बैल की मूर्तियाँ अत्यधिक संख्या में पायी गई हैं। अन्य पशुओं में हाथी, गैंडे, बन्दर, सुअर, भालू आदि की मूर्तियाँ निर्मित हैं।

The sculpture of the Indus Valley Civilization encompasses statues depicting both humans and animals. The human figurines predominantly portray women and exude a greater sense of grace and impressiveness compared to the male idols. Notably, a greater abundance of animal sculptures has been unearthed, showcasing high artistic quality. Among these sculptures, humped bull idols are particularly prevalent. Additionally, statues of elephants, rhinoceroses, monkeys, pigs, bears, and other animals have also been crafted with artistic finesse.

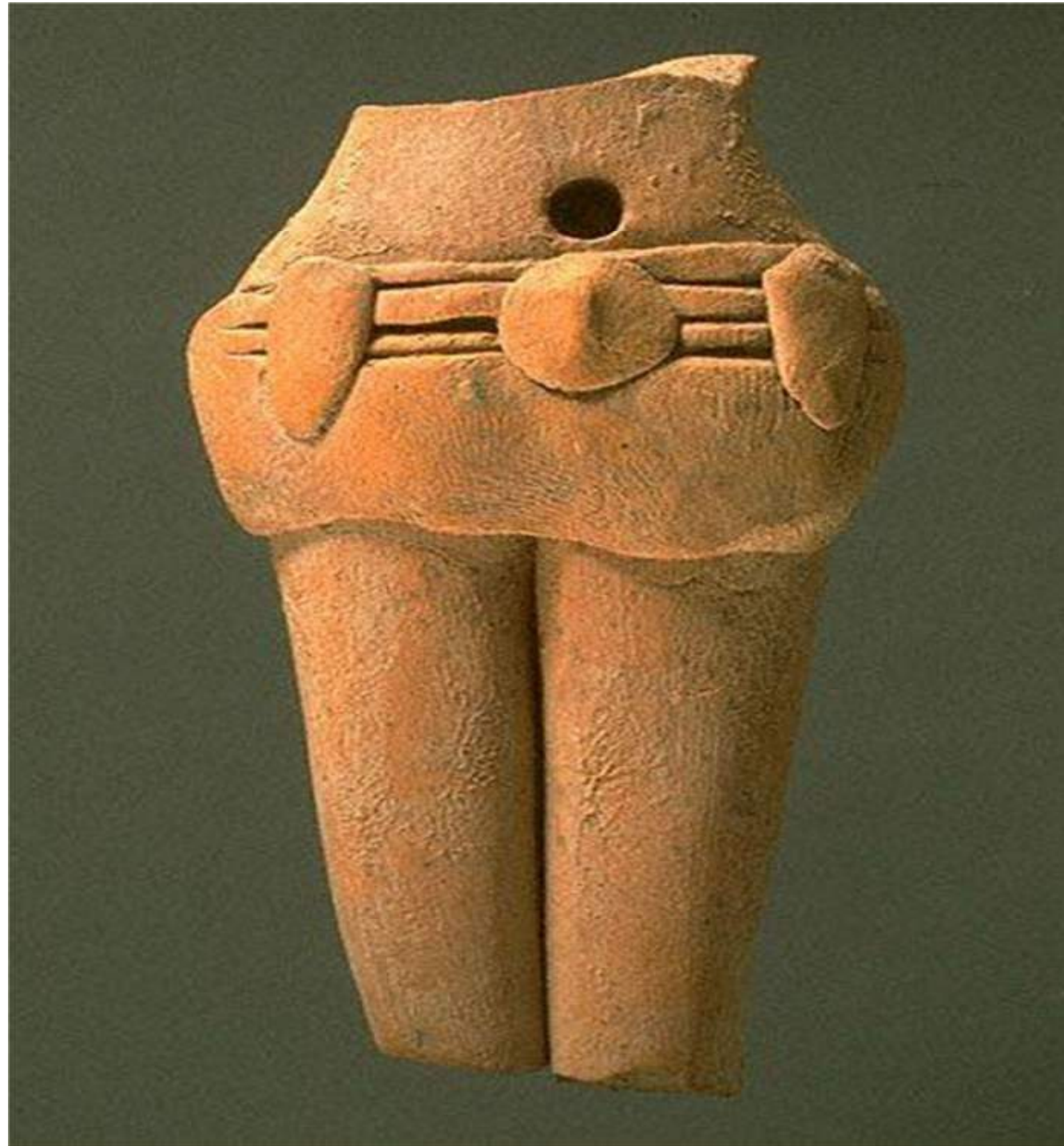


मोहनजोदड़ो से प्राप्त पुरोहित एवं नर्तकी की मूर्ति





# Female figurine from Mature Harappan period





## मौर्यकालीन मूर्तिकला

मौर्यकाल में मूर्तिकला में पशुओं की आकृति बेहतरीन रूप में अभिव्यक्त हुई है। विशेषकर, पशुओं में भी चार पशुओं को प्रतिनिधित्व मिला है, यथा- सिंह, सांड, हाथी और घोड़े। विशेषकर रामपुरवा का बैल एक अनुपम कृति है। वह बहुत ही प्रसन्नचित मुद्रा में खड़ा है। पशुओं की सजीव आकृति को देखते हुए एक विवाद उभरकर आया है कि सम्भवतः मौर्यकला कहीं बाहर से आयातित है क्योंकि अचानक इतनी विकसित अवस्था में ये मूर्तियाँ कैसे बन सकती हैं क्योंकि इससे पूर्व कोई सुडौल मूर्ति नहीं मिली है। किंतु अब ऐसा माना जाने लगा है कि मौर्यकला, हड़प्पाई मूर्तिकला के क्रमिक विकास को ही दर्शाती है।

## Mauryan sculpture

The Mauryan period witnessed the finest expression of animal figures in sculpture. Particularly noteworthy are four animals that received prominent representation: lions, bulls, elephants, and horses. The bull of Rampurwa stands out as a remarkable and unique masterpiece, captured in a joyful posture. Observing the lifelike portrayal of these animals has sparked a debate regarding the possibility of imported art influencing the Mauryan era. The sudden emergence of such highly developed idols raises questions about their origins.



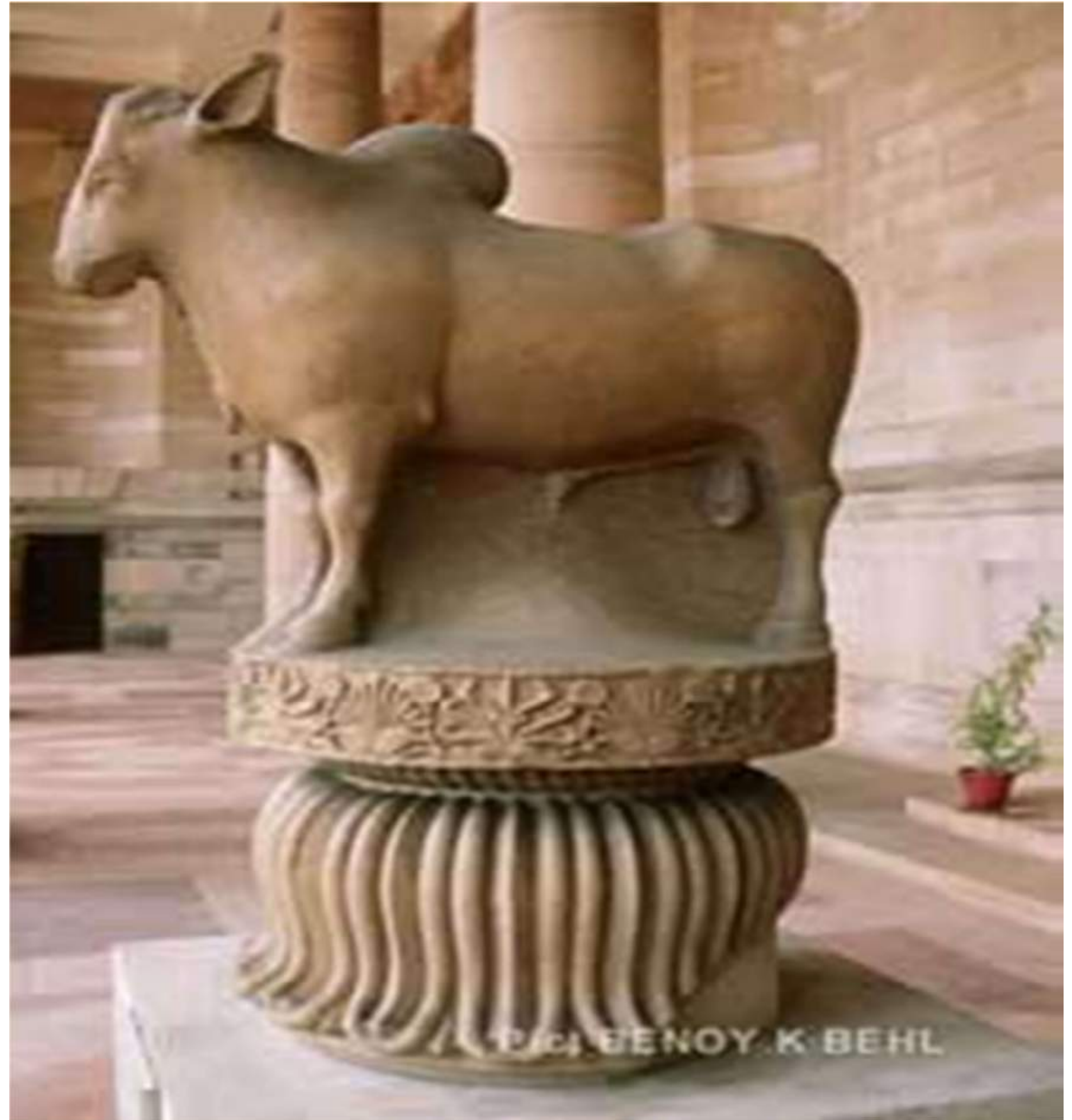
वस्तुतः हड़प्पा काल एवं मौर्यकाल के बीच भी मूर्तियों का निर्माण होता रहा था, किंतु संभवतः यह मूर्तियाँ शीघ्र नष्ट होने वाली सामग्रियों; यथालकड़ी से निर्मित थीं, इसलिए ये शीघ्र नष्ट हो गयीं। यही वजह है कि वर्तमान में उनका अवशेष नहीं मिलता।

मौर्यकाल में हमें लोक कला के भी उदाहरण मिलते हैं। इस काल में पत्थर की निर्मित यक्ष-यक्षिणी की मूर्तियाँ बड़ी संख्या में मिली हैं। ये खुले आकाश के नीचे खड़ी हैं। ये मूर्तियाँ इस प्रकार हैं- परखम के यक्ष, दीदारगंज की चामरग्राहिणी तथा बेसनगर की यक्षिणी।

Prior to this period, no well-formed idols have been discovered. However, it is now believed that Mauryan art reflects the gradual evolution of Harappan sculpture. Indeed, idols were likely crafted even during the Harappan era and the transition to the Mauryan period, but their perishable nature, likely made of materials like wood, led to their swift decay. Consequently, their remnants are not present in the present day.

In the Mauryan period, we can also observe examples of folk art. Numerous stone idols of Yaksha-Yakshini have been discovered during this era, standing beneath the open sky. Notable among these idols are the Yaksha of Parkham, the Chamaragrahini of Didarganj, and the Yakshini of Besnagar.

# Rampurva Bull Capital



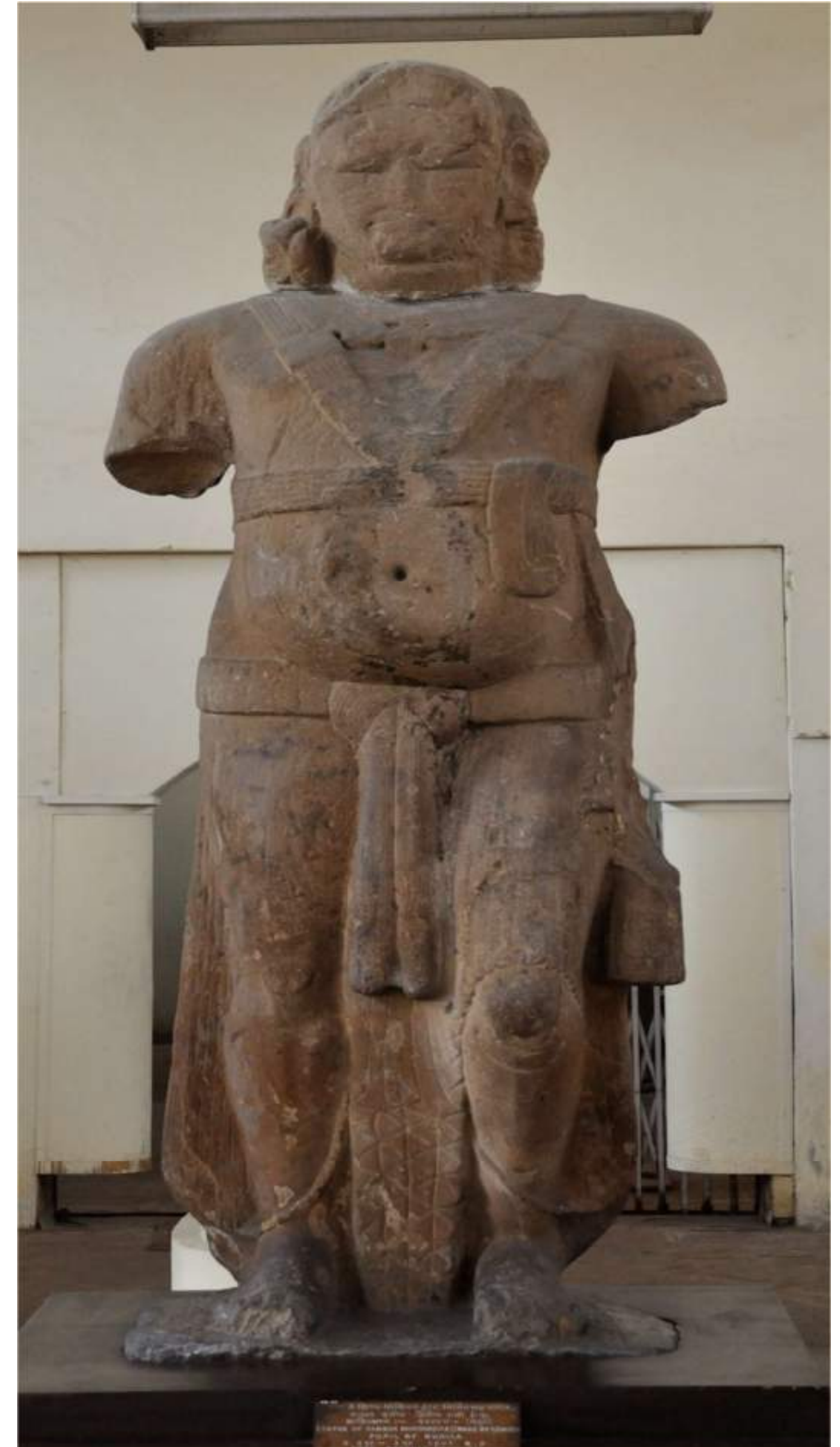


# Ashoka Pillar





# Yaksha





# Yakshini





## मौर्योत्तरकालीन मूर्तिकला

इस काल में मूर्तिकला की तीन स्वतंत्र शैलियाँ विकसित हुईं; यथा- गांधार कला, मथुरा कला तथा अमरावती कला। ये तीनों शैलियाँ अपने-अपने दृष्टिकोण से उत्कृष्ट थीं तथा भारतीय शिल्प कला में इन सभी को श्रेष्ठ स्थान प्रदान किया गया है।

### ■ गांधार मूर्तिकला

भारतीय मूर्तिकला के इतिहास में गांधार मूर्तिकला को विशेष महत्व प्राप्त है क्योंकि इसने भारतीय मूर्तिकला को एक नई दिशा दी।

## Post Mauryan Sculpture

During this period, three distinct styles of sculpture emerged: Gandhara art, Mathura art, and Amaravati art. Each style excelled in its own unique way and earned a prominent position in Indian craftsmanship.

### ■ Gandhara Sculpture

Gandhara sculpture holds significant importance in the history of Indian sculpture as it introduced a new direction to the art form. The epicenter of Gandhara sculpture was Taxila and its surrounding region in the northwest.



गांधार मूर्तिकला का केन्द्र उत्तर-पश्चिम में तक्षशिला एवं आस-पास का क्षेत्र रहा है। इसका विकास प्रायः दो चरणों में देखने को मिलता है- प्रथम चरण, दूसरी सदी तक और दूसरा चरण, दूसरी सदी और 7वीं सदी के बीच। सबसे दिलचस्प तथ्य यह है कि गांधार मूर्तिकला का स्वरूप समन्वयवादी है। यह कई शैलियों के मिश्रण को दर्शाता है-

■ **यूनानी शैली का प्रभाव-** गांधार कला में मूर्तियों के शरीर की बनावट पर यूनानी शैली का प्रभाव है। इसमें मूर्तियों का बलिष्ठ शरीर एवं मांसपेशियों का यथार्थवादी चित्रण हुआ है। यूनानी कला में अपोलो देवता के मुख का बड़ा ही भव्य चित्रण देखने को मिलता है। आगे गांधार कला में अपोलो देवता के ही मॉडल पर बुद्ध एवं बोधिसत्वों की मूर्तियाँ बनी हैं।

The development of this style is often divided into two phases: the first phase spanning until the second century, and the second phase from the second century to the 7th century. One intriguing aspect of Gandhara sculpture is its syncretic nature, showcasing a blend of various styles.

#### ■ Influence of Greek style

Gandhara art exhibits the influence of Greek style on the physical appearance of its idols. Notably, it portrays a realistic depiction of well-defined muscles. Greek art, renowned for its majestic portrayal of the face of the deity Apollo, also played a significant role. In Gandhara art, statues of Buddha and Bodhisattvas are crafted, drawing inspiration from the model of the Apollo god.

- **रोमन शैली का प्रभाव-** दूसरी तरफ, रोमन प्रभाव में गांधार शैली में वेशभूषा, पोशाक, आभूषण आदि के चित्रण पर विशेष बल दिया गया। मूर्तियों को भव्य चोगा पहनाया जाता, मूर्ति के मस्तक पर राजमुकुट का चित्रण किया जाता तथा कान में कुण्डल एवं शरीर के आभूषण के अंकन पर विशेष बल दिया जाता था।

- **Influence of Roman style-** Furthermore, under Roman influence, the Gandhara style placed particular emphasis on the depiction of costumes, clothing, and ornaments. The idols were adorned in magnificent robes, crowns were intricately portrayed on their heads, and meticulous attention was given to the detailing of earrings and other body ornaments.



■ **मध्य-एशियाई प्रभाव-** मध्य एशिया में शकों एवं पार्थियन शासकों के प्रभाव में भी गांधार शैली में बदलाव देखा गया। सामान्यतः मूर्ति-निर्माण में कच्चे माल अथवा सामग्री के रूप में गहरे नीले पत्थर अथवा काले पत्थर का प्रयोग किया जाता था, परन्तु अब चूना प्लास्टर का भी प्रयोग किया जाने लगा। उसी प्रकार, पार्थियन शासकों के प्रभाव में मूर्तियों को तिकोनी टोपी पहनायी जाने लगी। इतना ही नहीं, मूर्तिकला में अग्नि रेखा का भी अंकन होने लगा। इस पर हम ईरानी प्रभाव मान सकते हैं।

■ **भारतीय प्रभाव-** भारतीय प्रभाव में मूर्ति के मुख पर आध्यात्मिकता दर्शायी जाने लगी। गांधार मूर्तिकला शरीर से भले ही यूनानी-रोमन थी, परन्तु आत्मा से भारतीय ही बनी रही।

■ **Central-Asian Influence-** The Gandhara style experienced transformations influenced by the Sakas and Parthian rulers of Central Asia. While traditionally dark blue or black stone was the primary material used in sculpture-making, the introduction of lime plaster marked a significant shift. Furthermore, under the influence of Parthian rulers, triangular caps became a distinctive feature in the attire of the idols. Another notable addition was the representation of Agni Rekha (Fire Line) in the sculptures. These changes point to the evident influence of Iranian aesthetics on the Gandhara style.

■ **Indian influence-** In terms of Indian influence, the face of the idol in Gandhara sculpture reflected a profound sense of spirituality. While the body of the sculptures may have displayed Greco-Roman characteristics, the underlying spirit remained distinctly Indian.

गांधार कला  
Kushan Maitreya





गांधार कला  
Seated Buddha





# गांधार कला





**प्रश्न-** गांधार मूर्तिकला रोमन वासियों की उतनी ही ऋणी थी, जितनी कि वह यूनानियों की थी। स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर-** गांधार मूर्तिकला, भारतीय मूर्तिकला के इतिहास में एक

महत्वपूर्ण विकास क्रम को दर्शाती है। यह उत्तर-पश्चिम में तक्षशिला एवं आस-पास के क्षेत्रों में विकसित हुयी थी क्योंकि ये क्षेत्र भारतीय एवं यूनानी-रोमन संस्कृति के मिलन स्थल रहे थे। गांधार मूर्तिकला अपनी शारीरिक बनावट में मुख्यतः यूनानी तत्वों से, जबकि वेश-भूषा एवं साज-सज्जा में रोमन तत्वों से प्रभावित थी। वहीं दूसरी तरफ यह अपनी आत्मा से भारतीय थी।

**Question-** Gandhara sculpture owed as much to the Romans as to the Greeks. Explain.

**Answer –** Gandhara sculpture holds a significant place in the history of Indian sculpture as it showcases a noteworthy sequence of development. It flourished in Taxila and its surrounding regions in the northwest, which served as a crossroads for Indian and Greco-Roman cultures. The physical design of Gandhara sculpture was primarily influenced by Greek elements, while Roman influences were evident in its attire and ornamentation. However, at its core, Gandhara sculpture remained deeply rooted in its Indian spiritual essence.

In Greece, gods were depicted in human form, and this artistic tradition influenced the creation of idols of gods in the Greco-Roman art style.

यूनान में देवताओं को मानव रूप में प्रस्तुत किया जाने लगा था। यूनानी-रोमन कला में देवताओं की मूर्तियां निर्मित की जाती थीं, इसलिये भारत की भूमि पर भी यूनानी-रोमन प्रभाव से देवताओं की मूर्तियां मानव रूप में बनायी जाने लगीं। इसे 'गांधार कला' का नाम दिया गया। गांधार कला के अंतर्गत बुद्ध एवं बोधिसत्व की मूर्तियां निर्मित की गईं। इस कला के अंतर्गत मूर्ति की शारीरिक बनावट यथार्थ रूप में प्रस्तुत की गयी। उदाहरण के लिए, मांसपेशियां, केश विन्यास तथा शरीर के विभिन्न अंगों के यथार्थ चित्रण, इन सभी पर सीधा यूनानी प्रभाव था। बुद्ध को यूनानी देवता अपोलो की तरह प्रस्तुत किया गया। किंतु बुद्ध के शरीर पर कपड़े एवं आभूषण रोमन शैली से प्रभावित थे। रोमन शैली में पारदर्शी कपड़े, उनकी सिलवटें तथा मूर्ति के सिर पर राजमुकुट एवं शरीर के अन्य आभूषण को दर्शाया गया था। फिर आगे भारतीय प्रभाव में मूर्ति के मुख पर आध्यात्मिकता को भी प्रदर्शित किया जाने लगा।

When this influence reached the land of India, it gave rise to what is known as "Gandhara Art." This art form was primarily responsible for making statues of Buddha and Bodhisattvas. In Gandhara Art, a strong emphasis was placed on presenting the physical structure of the idols in a realistic manner. The Greek influence was evident in various aspects such as the musculature, hairstyle, and precise depiction of different body parts. In fact, Buddha was often depicted with similarities to the Greek god Apollo. However, the clothing and ornaments adorning Buddha's body were influenced by the Roman style. This included the portrayal of transparent clothes, intricate folds, crowns atop the sculpture heads, and other body ornaments. Despite these foreign influences, the Indian touch was not lost as spirituality was also infused into the expressions on the faces of the sculpture, representing the enduring Indian influence on Gandhara Art.



**अभ्यास प्रश्न: गांधाराई कला में मध्य एशियाई एवं यूनानी-बैक्ट्रियाई तत्वों को उजागर कीजिए। ( UPSC-2019, 150 शब्द )**

**उत्तर:** गांधार कला का विकास तक्षशिला के आस-पास के क्षेत्रों में हुआ था। गांधार कला यूनानी कला और भारतीय कला के मिश्रण का परिणाम है। सिकंदर के समय से भूमध्यसागरीय क्षेत्रों और भारत के बीच आर्थिक एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान होने लगा था। गांधार कला में सांस्कृतिक समन्वय दिखाई देता है।

गांधार कला में कई संस्कृतियों का स्पष्ट प्रभाव दिखता है जिसमें मध्य एशियाई एवं यूनानी बैक्ट्रियाई तत्वों को इसी संदर्भ में देखा जाना चाहिये, जो इस प्रकार हैं—

**Exercise Question: Highlight the Central Asian and Greco-Bactrian elements in Gandhara art. [UPSC 2019 150 words]**

**Answer:** Gandhara art flourished in the regions surrounding Taxila and is a product of the blending of Indo-Greek artistic traditions. Following Alexander's conquests, there was an increase in economic and cultural interactions between the Mediterranean regions and India, resulting in a cultural fusion that is evident in Gandhara art.

Gandhara art exhibits distinct influences from various cultures, including Central Asian and Greek-Bactrian elements.

## यूनानी कला का प्रभाव-

मूर्ति निर्माण के लिए गहरे नीले और काले पत्थर का प्रयोग। शरीर को सौष्ठवयुक्त दिखाना अर्थात् शरीर को यथार्थवादी रूप देना जिसमें माँसपेशियाँ और शरीर को सुडौल बनाना।

गांधार कला में रोमन कला का भी प्रभाव देखा जा सकता है जिसमें मूर्ति की सजावट पर विशेष बल दिया गया है अर्थात् भारी मात्रा में सजावट, राजमुकुट, आभूषण आदि।

## गांधार कला में मध्य एशियाई तत्वों का प्रभाव:

गांधार कला के अंतर्गत मूर्ति को जो तिकोनी टोपी पहनायी जाती है, वह मध्य एशियाई तत्व को प्रदर्शित करती है। इसके साथ ही मूर्ति निर्माण में चूने का प्रयोग भी।

The impact of Greek art is notable through the use of dark blue and black stones for crafting idols and the emphasis on realistically depicting the human body, with attention given to muscular details and body proportions.

The influence of Roman art can also be seen in Gandhara art, particularly in the lavish decoration of idols, such as intricate crowns and ornamental adornments.

## Gandhara art reflects the influence of Central Asian elements:-

For instance, the triangular cap worn by the idols are indicative of Central Asian styles. Additionally, the use of lime for idol-making is another characteristic feature.



गांधार कला में भारतीय कला का भी प्रभाव दिखता है जिसमें मूर्ति के मुख पर अध्यात्म लाने का प्रयास किया गया है।

इस प्रकार उपर्युक्त विवरण से गांधार कला में मध्य एशियाई एवं यूनानी-बैक्ट्रियाई तत्वों की विशेषता स्पष्ट हो जाती है। गांधार कला के अंतर्गत भारत में बुद्ध की मूर्तियाँ अधिक बनायी गयीं।

#### ❑ मथुरा एवं गांधार कला शैली में अन्तर के बिन्दु

1. गांधार कला का मौलिक क्षेत्र उत्तर-पश्चिम में तक्षशिला एवं आस पास का क्षेत्र रहा था, जबकि मथुरा कला का क्षेत्र मथुरा, आगरा और आस-पास का क्षेत्र रहा था।

Lastly, Gandhara art displays the influence of Indian art, as seen in the attempts to capture spirituality on the faces of the idols.

In summary, the distinct characteristics of Central Asian and Greco-Bactrian elements in Gandhara art are evident from the above description. Furthermore, it is worth noting that a significant number of Buddha statues were made in India under the Gandhara art.

#### ❑ Difference between Mathura and Gandhara styles –

1. Gandhara art originated in Taxila and the surrounding north-west region, while Mathura art flourished in Mathura, Agra, and the neighboring areas.

2. मथुरा कला ब्राह्मण, बौद्ध और जैन सभी पंथों से सम्बद्ध थी, तो गांधार कला मुख्यतः उत्तर-पश्चिम में बौद्ध पंथ से सम्बद्ध रही थी।
3. गांधार कला में कच्चे माल अथवा सामग्री के रूप में गहरे नीले पत्थर अथवा काले पत्थर का प्रयोग होता था, तो मथुरा कला में लाल पत्थर का।
4. गांधार कला का दृष्टिकोण यथार्थवादी था, तो मथुरा कला का आदर्शवादी। दूसरे शब्दों में, गांधार कला में मूर्ति के शरीर की बनावट, कपड़ों की सिलवटें आदि का बड़ा ही यथार्थवादी चित्रण किया गया है, जबकि मथुरा कला में शरीर की बनावट को महत्व नहीं दिया गया, कपड़े भी पारदर्शी एवं शरीर से चिपके हुए दिखाए जाते हैं। इसमें केवल मूर्ति के मुख पर आध्यात्मिकता दर्शाने पर विशेष बल दिया जाता है। मूर्तियाँ प्रायः विचारमग्न दिखती हैं।

2. Mathura art was associated with multiple sects including Brahmin, Buddhist, and Jain, whereas Gandhara art was predominantly connected to the Buddhism in the north-west.
3. Gandhara art employed dark blue or black stone as its primary material, while Mathura art utilized red stone.
4. Gandhara art leaned towards realism, highlighting intricate details such as the texture of the idol physical appearance and folds of clothing. In contrast, Mathura art leaned towards idealism. The focus was not on depicting body texture but rather on portraying transparent and closely-fitted garments. The emphasis in Mathura art was on showcasing spirituality primarily through the expressions on the face of the idols, often depicting them deeply involved in contemplation.



# मथुरा मूर्ति कला



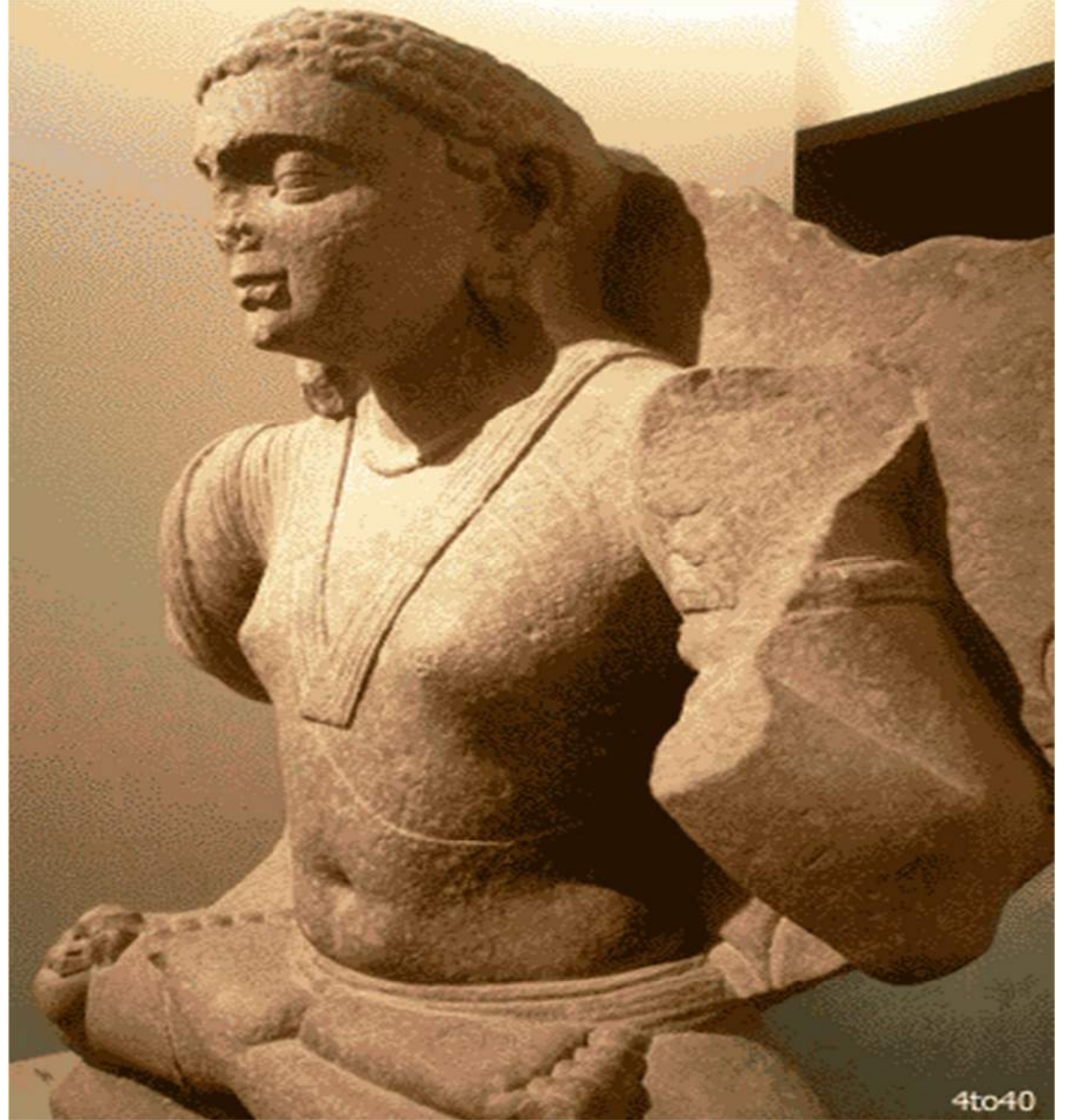


# मथुरा मूर्ति कला





# मथुरा मूर्ति कला





## ❑ अमरावती शैली

यह शैली सातवाहनों तथा उसके उत्तराधिकारी इक्ष्वाकुओं के अधीन अमरावती, नागार्जुनकोंड एवं आस-पास के क्षेत्रों में विकसित हुई। इसमें कच्चे माल अथवा सामग्री के रूप में संगमरमर का प्रयोग होता था तथा बड़े ही भव्य प्रकार की मूर्तियाँ बनाई जाती थीं।

## ❑ Amravati Style

This art style thrived in Amaravati, Nagarjunakonda, and the surrounding regions under the rule of the Satavahanas and their successors, the Ikshvakus. Marble was utilized as the primary material in this style, resulting in the creation of magnificent and majestic idols.



जहाँ मथुरा शैली की मूर्तियों में आध्यात्मिक बातों को अधिक महत्व दिया गया है, वहीं अमरावती शैली में मूर्तियों के निर्माण में सांसारिक बातों को विशेष महत्व दिया गया है। अमरावती शैली का मुख्य बल ऐन्द्रिक सुखों पर है अर्थात् मूर्तियों में एक प्रकार के ऐश्वर्य का प्रदर्शन हुआ है। वस्तुतः इस काल तक दक्षिण भारत के समाज पर रोमन व्यापार का प्रभाव उभरकर आया। अतः सुख-समृद्धि में वृद्धि के कारण ऐन्द्रिक सुख की ओर आकर्षण बढ़ गया।

The idols of the Mathura style prioritize spiritual aspects, while those of the Amravati style pay more attention to worldly elements. In the Amravati style, there is a special focus on sensory details, displaying a sense of richness and luxury in the idols. This shift in emphasis can be attributed to the influence of Roman trade on the society of South India during that time. With an increase in happiness and prosperity, there was a greater attraction towards indulging in sensory pleasures.



# अमरावती मूर्ति कला



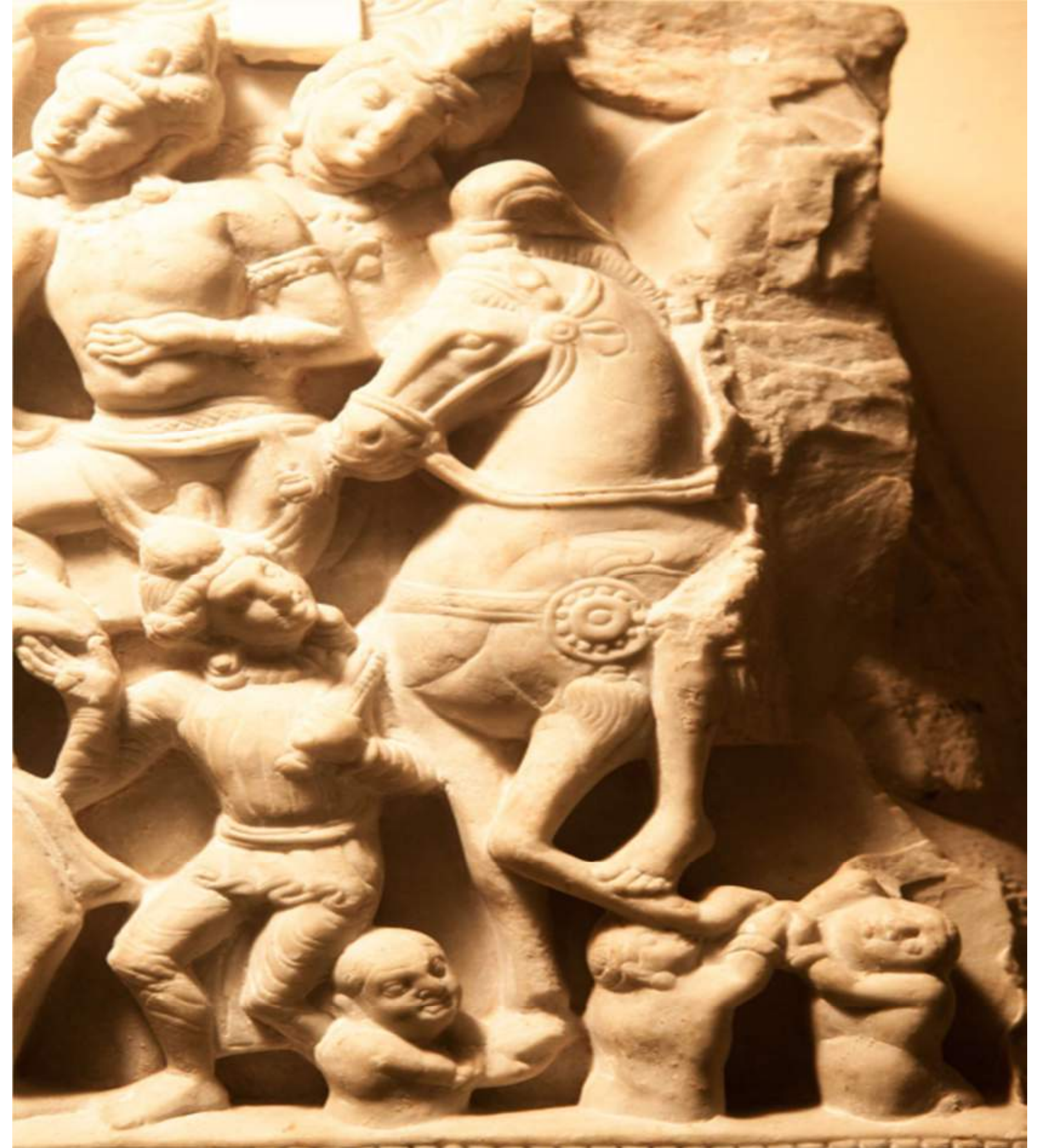


# અમરાવતી મૂર્તિ કલા





# અમરાવતી મૂર્તિ કલા





## गुप्तकालीन मूर्तिकला

गुप्तकाल में मूर्ति कला ने क्लासिकल मानदंड ग्रहण किया अर्थात् इस काल में मूर्तिकला में अत्यधिक प्रौढ़ता आयी तथा मूर्तिकला ने ऐसे मानदंड विकसित किए, जिन्होंने न केवल भारत के अन्दर, अपितु भारतीय उपमहाद्वीप के बाहर की मूर्तिकला पर भी अपना प्रभाव छोड़ा।

इस काल में मूर्तिकला की दो प्रचलित शैलियाँ, मथुरा कला एवं गांधार कला इन दोनों के मिश्रण से सारनाथ शैली का विकास हुआ। इस शैली में बेहतरीन प्रकार की मूर्तियों का निर्माण हुआ। एक तरफ गांधार शैली के प्रभाव में शरीर की बेहतर बनावट को महत्व दिया गया, तो दूसरी तरफ मथुरा शैली के प्रभाव में मूर्ति के मुख पर आध्यात्मिकता भी दर्शायी गई।

## Gupta sculpture

During the Gupta period, sculpture reached a pinnacle of artistic excellence and adhered to classical norms. This era witnessed the remarkable maturity of sculpture, which not only influenced artistic expression within India but also left a lasting impact beyond the Indian subcontinent.

During this period, the Sarnath style emerged as a fusion of two renowned sculpture styles, namely Mathura art and Gandhara art. This style produced some of the finest idols of its time. It incorporated the emphasis on lifelike body textures influenced by the Gandhara style, while also portraying spirituality on the idol's face influenced by the Mathura style.



गुप्तकालीन मूर्ति में मंद आभामंडल का विकास दिखता है तथा मूर्ति के मुख पर विभिन्न प्रकार की भाव-भंगिमाओं को दर्शाया गया है। कुषाणकालीन मूर्तियाँ नग्न रूप में भी दर्शायी जाती थीं, परन्तु गुप्तकालीन मूर्तियों को उचित वस्त्रों से ढका गया है। धातु से निर्मित मूर्ति के निर्माण में भी गुप्त काल विकसित अवस्था में दिखता है। उदाहरण के लिए, बिहार के सुल्तानगंज से एक टन की बुद्ध की काँसे की मूर्ति प्राप्त हुई है।

In Gupta sculptures, a remarkable advancement in portraying a divine aura is evident, along with a wide range of expressions skillfully depicted on the faces of the idols. Unlike the earlier Kushan period, where nudity was prevalent, Gupta period idols are adorned with appropriate clothing. Moreover, the Gupta period witnessed significant progress in the creation of metal idols. As an illustration, a massive bronze Buddha statue weighing one ton was unearthed from Sultanganj in Bihar.



# Preaching Buddha - Sarnath





# Bronze Statue of Buddha from Sultanganj





## गुप्तोत्तरकालीन मूर्तिकला

### ■ पल्लव कला

पल्लवों के अधीन बड़ी संख्या में पहाड़ों को काटकर मंदिर बनाए गए थे। इन मंदिरों में देवताओं की मूर्तियाँ भी स्थापित की गईं, जो काफी भव्य प्रतीत होती हैं तथा बेहतर मूर्तिकला का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। उदाहरण के लिए, नरसिंहवर्मन प्रथम के द्वारा निर्मित रथ मंदिर में अनेक सुंदर मूर्तियाँ निर्मित की गई हैं। द्रौपदी रथ में दुर्गा की मूर्ति है तथा अर्जुन रथ में शंकर की मूर्ति, उसी प्रकार धर्मराज रथ में स्वयं नरसिंहवर्मन प्रथम की मूर्तियाँ स्थापित हैं।

## Post Gupta Sculpture

### ■ Pallava Art

The Pallavas built large number of rock-cut temples, showcasing splendid idols of deities. These temples stand as magnificent examples of exceptional sculpture. One notable temple, erected by Narasimhavarman I, having numerous exquisite sculptures. Within Draupadi's chariot, one can find the idol of Durga, while Shiva's idol adorns Arjuna's chariot. Similarly, the idols of Narasimhavarman I himself are installed within Dharmaraja's chariot.



## ■ चोल मूर्तिकला

ऐसा माना जाता है कि पल्लव कालीन कला ने चोल काल तक आकर क्लासिकल मानदंड ग्रहण किए। उसी प्रकार, मूर्तिकला भी इसका अपवाद नहीं है। चोल काल में बड़ी संख्या में मंदिर बनाए गए तथा उसमें मूर्तियाँ स्थापित की गईं। उदाहरण के लिए, आरंभिक मंदिर में हम नर्तमलाई के विजयालय चोलेश्वर मंदिर की चर्चा कर सकते हैं। इसमें प्रस्तर की भव्य मूर्ति स्थापित की गई थी। चूँकि चोल शासक शैव धर्म के उपासक थे, इसलिए इस काल के मंदिरों में, विशेषकर शिव की मूर्तियाँ मिलती हैं। साथ ही, राजा की मूर्तियाँ भी बनती थीं। राजराज प्रथम का बृहदेश्वर मंदिर मूर्ति निर्माण कला की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण चरण को व्यक्त करता है।

## ■ Chola Sculpture

During the Chola period, it is widely believed that the art, including sculpture, embraced classical norms. Numerous temples were constructed during this era, serving as homes for intricately crafted idols. One noteworthy example is the Vijayalaya Cholesvara temple in Narttamalai, which proudly displays a magnificent stone idol. Since the Chola rulers were devout followers of Shaivism, the temples of this period predominantly feature idols of Lord Shiva. Additionally, sculptures of the kings themselves were also made. The Brihadeeswarar temple, commissioned by Rajaraja I, stands as a significant milestone in the evolution of sculptural art.



किंतु चोल कालीन मूर्तिकला विशेषकर ताँबे एवं काँसे की मूर्तियों के निर्माण के लिए जानी जाती हैं। बड़ी संख्या में देवताओं, राजाओं एवं दाताओं की मूर्तियाँ बनाई गईं। सबसे बढ़कर, शिव नटराज की मूर्ति कांस्य कला का बेहतर उदाहरण प्रस्तुत करती है। जहाँ प्रस्तर की मूर्ति मंदिर में निर्मित हुई, वहीं काँसे की मूर्ति मंदिर से बाहर मिलती है।

The sculpture of the Chola period is renowned for its exceptional craftsmanship in copper and bronze. Countless idols depicting gods, kings, and donors were created during this time. A particular significance is the iconic idol of Shiva Nataraja, which exemplifies the mastery of bronze art. While stone idols were commonly placed within the temples, bronze idols were often found outside the temple premises.



**Shiva, Uma, and Their Son Skanda (Somaskandamurti) - Copper Alloy Sculpture,  
Chola Period, Early 11th Century**





# Statue of Rajaraja Chola





## Sculpture, Chola Period





## Sculpture, Chola Period



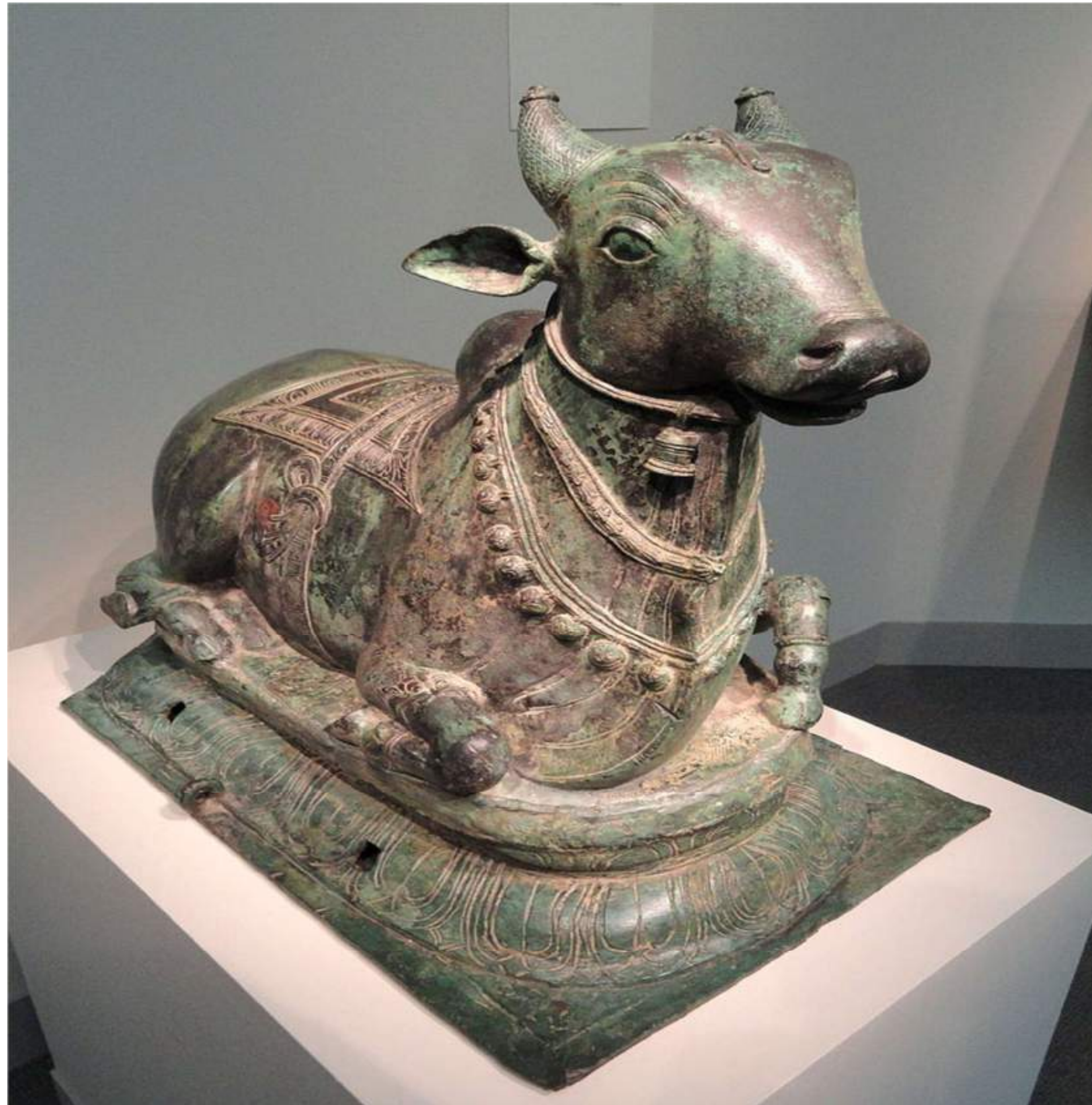


## Sculptures at Thanjavur Brihadeeswara Temple





## Nandi the Bull, Chola dynasty, 12th century AD





# Nataraja , 11th Century Bronze, Tanjore





## ■ पालकालीन मूर्तिकला

यह मूर्तिकला 8वीं, 9वीं सदी में पाल शासकों के अधीन बंगाल तथा पूर्वी भारत में विकसित हुई। ये मूर्तियाँ काले बेसाल्ट पत्थर की बनाई गई हैं। इस काल की मूर्तिकला से जुड़े हुए दो महान कलाकारों को संरक्षण मिला था, ये कलाकार थे- धीमन तथा विठपाल।

## ■ Pala sculpture

The art of sculpture flourished in Bengal and eastern India under the patronage of the Pala rulers during the 8th and 9th centuries. The idols made during this period were crafted from black basalt stone. Two renowned artists, Dhiman and Vithpal, played a significant role in the development of this sculpture style and received the patronage of the Pala rulers.



**END**

***Thank You!***